"मन"

• जनम जनम की इस मन कउ मल लागी काला होआ सिआह । खनलीं धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ।

अर्थः- कई जन्मों की इस मन को मैल लगी हुई है इसलिए ये बहुत ही काला हुआ पड़ा है सफेद नहीं हो सकता जैसे तेली का कपड़ा धोने से सफेद नहीं होता चाहे सौ बार धोने का प्रयत्न करो ।

गुर परसादी जीवत मरै उलटी होवै मति बदलाह । नानक मैल न लगई ना फिरि जोनी पाह । (3-651)

अर्थः- हे नानक ! अगर गुरु की कृपा से मन जीवित ही मर जाए और मति माया से उलट जाए, तो भी मैल नहीं लगती और मनुष्य फिर जूनियों में भी नहीं पड़ता ।

• मन न तू गारब अटिआ गारब लदिआ जाहि । माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि । गारब लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे । अहंकार तिसना रोग लगा बिरथा जनम गवावहे ।

अर्थः- हे मन ! तू अब अहंकार से लिबड़ा पड़ा है, अहंकार से लदा हुआ ही जगत से चला जाएगा, देखने को सुंदर माया ने तुझे अपने मोह में फसाया हुआ है इसका नतीजा ये निकलेगा कि तुझे बार - बार अनेक जूनियों में डाला जाएगा । हे मूर्ख मन ! जब तू अहंकार में फंसा हुआ ही यहाँ से चलेगा तो चलने के वक्त हाथ मलेगा, तूझे अहंकार चिपका हुआ है, तुझे तृष्णा का रोग लगा हुआ है तू ये मानव जन्म व्यर्थ गवा रहा है ।

मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे । इह कहै नानक मन तूं गारब अटिआ गारब लदिआ जावहे ।

अर्थः- हे मन - मर्जियां करने वाले मूर्ख मन ! तू परमात्मा को नहीं स्मरण करता, परलोक पहुँच के अफसोस करेगा । तुझे नानक इस तरह बताता है कि तू यहाँ अहंकार से भरा हुआ है जगत से चलने के वक्त भी अहंकार से लदा हुआ ही जाएगा ।

मन तूं मत माण करहि जि हउ किछ जाणदा गुरमुखि निमाणा होह । अंतरि अगिआन हउ बुधि है सचि सबदि मल खोह ।

अर्थः- हे मन ! देखना कहीं ये गुमान ना कर बैठना कि मैं बहुत समझदार हूँ, गुरु की शरण पड़ के माण त्याग के रख हे मन ! तेरे अंदर परमात्मा से दूरी है, तेरे अंदर 'मैं - मैं' करने वाली बुद्धि है इस मैल को सदा - स्थिर हरि नाम में जुड़ के गुरु के शब्द में टिक के दूर कर ।

होह निमाणा सतिगुर अगै मत किछ आप लखावहे । आपणै अहंकारि जगत जलिआ मत तूं आपणा आप गवावहे ।

अर्थः- हे मन ! विनम्र हो के गुरु के चरणों में गिर पड़ो । देखना, कहीं अपना आप जताने ना लग पड़ना । जगत अपने ही अहंकार में जल रहा है, देखना, कहीं तू भी अहंकार में पड़ कर अपने आपका नाश ना कर लेना ।

सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लगि रहु । इउ कहै नानक आप छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ।

अर्थः- इस खतरे से तभी बचेगा, अगर तू गुरु के हुक्म में चल के काम करेगा । सो, हे मन ! गुरु के हुक्म मे टिका रह । हे मन ! तुझे नानक इस प्रकार समझाता है हे मन अहंकार त्याग दे, अहंकार छोड़ के ही सुख पाएगा

धन सु वेला जित मै सतिगुरु मिलिआ सो सह चिति आइआ । महा अनंद सहज भइआ मनि तनि सुख पाइआ ।

अर्थः- वह वक्त सौभाग्यपूर्ण था जब मुझे गुरु मिल गया था और, गुरु की किरपा से वह पति - प्रभु मेरे चित्त में आ बसा । मेरे अंदर बहुत आनंद पैदा हुआ, मेरे अंदर आत्मिक अडोलता पैदा हो गई, मेरे मन ने मेरे दिल ने सुख अनुभव किया ।

सो सहु चिति आइआ मनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ।
जा तिस भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ।

अर्थः- गुरु की कृपा से वह पति प्रभु मेरे चित्त में आ बसा, गुरु ने प्रभु को मेरे मन में बसा दिया, और मेरे ही अवगुण भुला दिए । हे भाई ! जब उस मालिक को ठीक लगता है उसके गुण मनुष्य के अंदर रौशन हो जाते हैं, गुरु स्वयं उस मनुष्य के जीवन को सुंदर बना देता है ।

से जन परवाण होए जिन्ही इक नाम दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ । इउ कहै नानक धंन सु वेला जित मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ । (3-441)

अर्थः- जो मनुष्य सिर्फ हरि - नाम को अपने दिल में पक्का कर लेते हैं, और माया का मोह अंदर से दूर कर लेते हैं, वे परमात्मा की दरगाह में स्वीकार हो जाते हैं । नानक इस प्रकार कहता है भाग्यशाली था वह समय जब मुझे गुरु मिला था और गुरु की कृपा से वह पति - प्रभु मेरे चित्त में आ बसा था ।

मेरे मन बैरागिआ तूं बैराग करि किस दिखावहि । हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ।

अर्थः- हे वैराग में आए हुए मेरे मन ! तू वैराग करके किसे दिखाता है ? इस ऊपर - ऊपर से दिखाए वैराग से तेरे अंदर आत्मिक आनंद नहीं बन सकेगा । हे मन ! जो मनुष्य परमात्मा के गुण गाते रहते हैं, उनके अंदर सदा ही उमंग व चाव बना रहता है ।

करि बैराग तू छोडि पाखंड सो सहु सभ किछ जाणए । जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकम पछाणए ।

अर्थः- हे मेरे मन ! बाहरी दिखावे वाले वैराग का पाखण्ड छोड़ के और अपने अंदर मिलने की चाहत पैदा कर क्योंकि वह पति प्रभु अंदर की हरेक बात जानता है, वह प्रभु खुद ही जल में धरती में आकाश में हर जगह समाया हुआ है जो मनुष्य गुरु की शरण पड़ता है वह उस प्रभु की रजा को समझता है ।

जिनि हुकम पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए । इव कहै नानक सो बैरागी अनदिन हर लिव लावए ।

अर्थः- हे मेरे मन ! जिस मनुष्य ने परमात्मा की रजा समझ ली वही सारे आनंद प्राप्त करता है नानक तुझे ऐसे बताता है कि इस तरह के मिलाप की चाहत रखने वाला मनुष्य हर समय प्रभु चरणों में तवज्जो जोड़े रखता है ।

जह जह मन तू धावदा तह तह हरि तेरै नाले । मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबद समाले ।

अर्थः- हे मेरे मन ! जहाँ - जहाँ तू दौड़ता - फिरता है वहाँ - वहाँ ही परमात्मा तेरे साथ ही रहता है अगर तू उसे अपने साथ बसा हुआ देखना चाहता है तो हे मन ! अपनी चतुराई का आसरा छोड़ देना चाहिए ।

साथि तेरै सो सहु सदा है इक खिन हरि नाम समालहे । जनम जनम के तेरे पाप कटे अंत परमपद पावहे ।

अर्थः- हे मन ! गुरु का शब्द अपने अंदर संभाल के रख फिर तुझे दिख जाएगा कि वह पति प्रभु सदा तेरे साथ रहता है । हे मन ! अगर तू एक छिन के वास्ते भी परमात्मा का नाम अपने अंदर बसाए । तो तेरे अनेक जन्मों के पाप काटे जाएं, और अंत में तू सबसे ऊँचा दर्जा हासिल कर ले।

साचे नालि तेरा गंढ लागै गुरमुखि सदा समाले । इह कहै नानक जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ।

अर्थः- हे मन ! गुरु की शरण पड़ के तू सदा परमात्मा को अपने अंदर बसाए रख, इस तरह उस सदा कायम रहने वाले परमात्मा के साथ तेरा पक्का प्यार बन जाएगा । नानक तुझे ये बताता है कि हे मन ! जहाँ - जहाँ तू भटकता फिरता है वहाँ - वहाँ परमात्मा सदा तेरे साथ ही रहता है ।

सतिगुर मिलिऐ धावत थम्हिआ निज घर वसिआ आए । नाम विहाझे नाम लए नामि रहे समाऐ ।

अर्थः- हे भाई ! अगर गुरु मिल जाए तो ये भटकता मन भटकने से रुक जाता है, ये प्रभु - चरणों में आ टिकता है । फिर ये परमात्मा के नाम का सौदा करता है भाव परमात्मा का नाम जपता रहता है, नाम में लीन रहता है ।

धावत थम्हिआ सतिगुर मिलिऐ दसवां दुआर पाइआ । तिथै अंमृत भोजन सहज धुनि उपजै जित सबदि जगत थम्हि रहाइआ ।

अर्थः- हे भाई ! यदि गुरु मिल जाए तो भटकता मन भटकने से रुक जाता है यही आत्मिक अवस्था है वह दसवाँ दरवाजा जो इसे मिल जाता है जो ज्ञानेंद्रियों और कर्म इन्द्रियों से ऊँचा रहता है । उस आत्मिक अवस्था में पहुँच के ये मन आत्मिक जीवन देने वाले नाम की खुराक खाता है इसके अंदर आत्मिक अडोलता की रौंअचल पड़ती है उस आत्मिक अवस्था में ये मन गुरु शब्द की इनायत से दुनिया के मोह को रोक के रखता है ।

तह अनेक वाजे सदा अनहद है सचे रहिआ समाए । इउ कहै नानक सतिगुर मिलिऐ धावत थम्हिआ निजि घरि वसिआ आए ।

अर्थः- जैसे अनेक किस्म के साज बजने से बड़ा सुंदर राग पैदा होता है, वैसे ही उस आत्मिक अवस्था में मन के अंदर मानो अनेको संगीतमयी साज बनजे लग पड़ते हैं इसके अंदर सदा आनंद बना रहता है, मन सदा - स्थिर परमात्मा में लीन रहता है । हे भाई ! तुझे नानक ऐसे बताता है कि गुरु मिल जाए तो ये भटकता मन भटकने से रुक जाता है, और प्रभु - चरणों में आ टिकता है ।

मन तूं जोति सरूप है आपणा मूल पछाण । मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंग माण ।

अर्थः- हे मेरे मन ! तू उस परमात्मा की अंश है जो निरा नूर ही नूर है हे मन ! अपनी उस अस्लियत से साझं बना । हे मन ! वह परमात्मा सदा तेरे अंग - संग बसता है गुरु की मति ले के उसके मिलाप का स्वाद ले ।

मूल पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई । गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ।

अर्थः- हे मन ! अगर तू अपनी अस्लियत समझ ले तो उस पति - प्रभु से तेरी गहरी जान - पहचान बन जाएगी, तब तुझे ये समझ भी आ जाएगा कि आत्मिक मौत क्या चीज है और आत्मिक जिंदगी क्या है । हे मन ! अगर गुरु की कृपा से एक परमात्मा के साथ गहरी साझं डाल ले, तो तेरे अंदर परमात्मा के बिना कोई और मोह प्रबल नहीं हो सकेगा ।

मनि सांत आई वजी वधाई तां होआ परवाण । इउ कहै नानक मन तूं जोति सरूप है आपणा मूल पछाण ।

(3-440-441)

अर्थः- जब मनुष्य के मन में शाति पैदा हो जाती है जब इसके अंदर चढ़दीकला प्रबल हो जाती तब ये प्रभु की हजूरी में स्वीकार हो जाता है । नानक ऐसे बताता है, हे मेरे मन ! तू उस परमात्मा की अंश है जो निरा प्रकाश ही प्रकाश है, हे मन ! अपने उस असल से सांझ बना असल को पहचान ।

• जपि गोबिन्द गोपाल लाल । राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा काल ।

अर्थः- हे भाई ! गोबिंद का नाम जपा कर, सुंदर गोपाल का नाम जपा कर । हे भाई ! परमात्मा का नाम स्मरण किया कर, ज्यों - ज्यों नाम सिमरेगा तुझे उच्च आत्मिक दर्जा मिला रहेगा । भयानक आत्मिक मौत तेरे आत्मिक जीवन को फिर कभी खत्म नहीं कर सकेगी ।

कोटि जनम भ्रमि भ्रमि आइओ । वडै भागि साध संग पाइओ ।

अर्थः- हे भाई ! अनेक किस्म के करोड़ों जन्मों में भटक के अब तू मनुष्य जनम में आया है और यहाँ बड़ी किस्मत से तुझे गुरु का साथ मिल गया है ।

बिन गुर पूरे नाही उधार । बाबा नानक आखै एह बीचार ।

(5-885-886)

अर्थः- हे भाई ! नानक तुझे यह विचार की बात बताता है पूरे गुरु की शरण पड़े बिना अनेक जूनियों से पार - उतारा नहीं हो सकता ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"